आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनजाति नायक

“संथाल क्रांति, पाइका क्रांति से लेकर कोल क्रांति
और भील क्रांति तक, ये सभी क्रांतियाँ स्वतंत्रता संग्राम में
जनजाति योगदान को दर्शाती हैं।
‘धरती आबा’ भगवान बिरसा मुंडा जी के बलिदान से
हम सामाजिक उन्नयन और राष्ट्रभक्ति की सतत प्रेरणा पाते हैं।”

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी

माननीय राष्ट्रपति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनजाति नायक

स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान

तू-मैं, एक रक्त

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

सहयोग

सेल SAIL
स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनजाति नायक

जनजाति समाज और स्वतंत्रता संग्राम

भारत का जनजाति समाज अपनी आध्यात्मिक परम्पराओं, विशिष्ट संस्कृति और श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के साथ सदैव से भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। जब-जब देश की सुरक्षा पर संकट आया, जनजाति समाज ने अपने शौर्य और बलिदान से राष्ट्र की रक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जब अंग्रेजी शासन ने भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार करना प्रारम्भ किया तो उन्हें सबसे प्रारम्भिक और सशक्त चुनौती वनवासी अंचलों से ही मिलना प्रारम्भ हुई। जनजाति समाज ने कभी भी अंग्रेजों की दासता को स्वीकार नहीं किया और समय-समय पर सशस्त्र विद्रोह और संघर्ष किया।

चाहे तिलका माँझी के नेतृत्व में पहाड़िया आंदोलन हो, कोया जनजाति का विद्रोह हो, कोल जनजाति द्वारा सशस्त्र संघर्ष हो, भगवान बिरसा मुंडा के नेतृत्व में संघर्ष हो, सिदो-कान्हू के नेतृत्व में संथाल आंदोलन हो, भीलों के विभिन्न आंदोलन हों, मानगढ़ का बलिदान हो, रानीमाँ गाइदिन्ल्यू के नेतृत्व में नागा आंदोलन हो, अंग्रेजों के विरुद्ध जनजाति समाज के संघर्ष और बलिदान की एक समृद्ध परम्परा रही है।

संगठित आंदोलनों और विद्रोहों के अतिरिक्त जनजाति समाज द्वारा वैयक्तिक बलिदानों की भी एक लम्बी श्रृंखला रही है। हजारों नाम तो ऐसे हैं, जिनका बलिदान इतिहास के पन्नों में दर्ज ही नहीं हो पाया। आज भी जनजाति समाज में ऐसे अनेक लोकगीत और कथाएँ प्रचलित हैं, जो अंग्रेजों के साथ हुए जनजाति समाज के संघर्ष को रेखांकित करती हैं।

राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत जनजाति समाज द्वारा किए गए संघर्ष और बलिदान को शत् शत् नमन।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनजाति नायक

भूरेटिया, नई मानूँ रे नई मानूँ...

अंग्रेज, तेरी बात नहीं मानूँ...नहीं मानूँ...

(भीली गीत....1883-1913, मानगढ़ आंदोलन)

देश के जनजाति समाज ने कभी भी गुलामी स्वीकार नहीं की।

इसका एक उदाहरण है, 17 नवंबर 1913 को मानगढ़ में हुआ भील आंदोलन।

इस आंदोलन में 1500 से अधिक भील वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी।

जनजाति समाज के बलिदानों की ऐसी

हजारों कहानियाँ हैं, जो अनकही रह गईं...

भूरेटिया...

दिल्ली मा मारी गादी है

बेणेश्वर मारो लेखो है...

...नई मानूँ रे नई मानूँ ॥

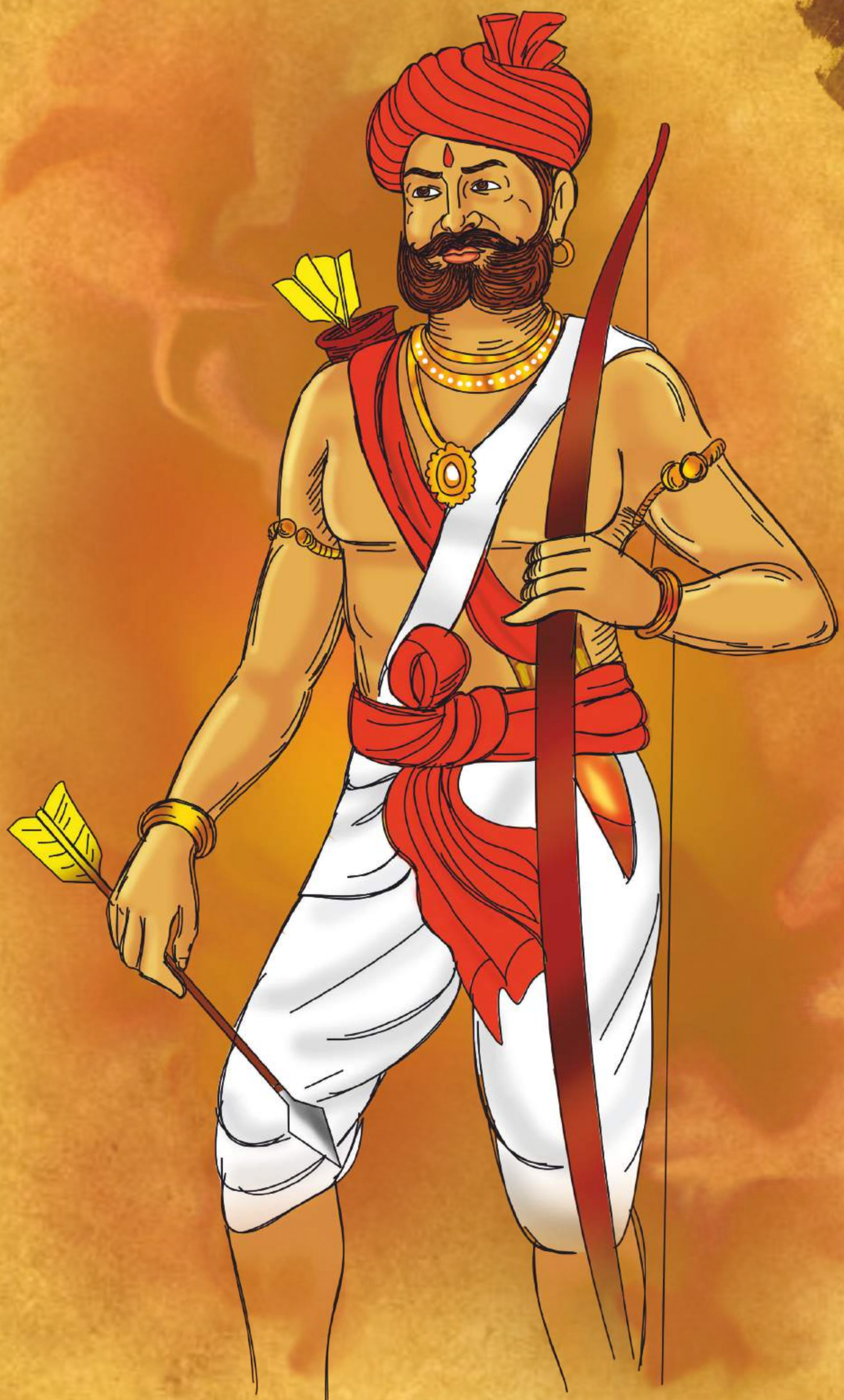

अमर बलिदानी
राणा पूंजा भील

***जन्म** : मेरपुर, राजस्थान*

***जनजाति** : भील | **बलिदान** : तिथि उपलब्ध नहीं*

शूरवीरों को जन्म देने वाली मेवाड़ की भूमि के राणा पूंजा भील ने मेवाड़ के वनांचल को अपने पराक्रम से गौरवान्वित किया। उन्होंने महाराणा प्रताप के सेनापति के रूप में 18 जून, 1576 को हल्दीघाटी के युद्ध की दिशा बदल दी। उनके नेतृत्व में भील तीरंदाजों ने मुगलों की सेना को हल्दीघाटी में बनास नदी के किनारे से आगे नहीं बढ़ने दिया और गोफण से की गई पत्थरों की बरसात ने मुगल सेना को कई मील पीछे हटने को मजबूर कर दिया। पूंजा भील की उपलब्धियों और योगदान को सम्मानित करने के लिए महाराणा प्रताप ने सम्मान के रूप में उन्हें 'राणा' की उपाधि प्रदान की।

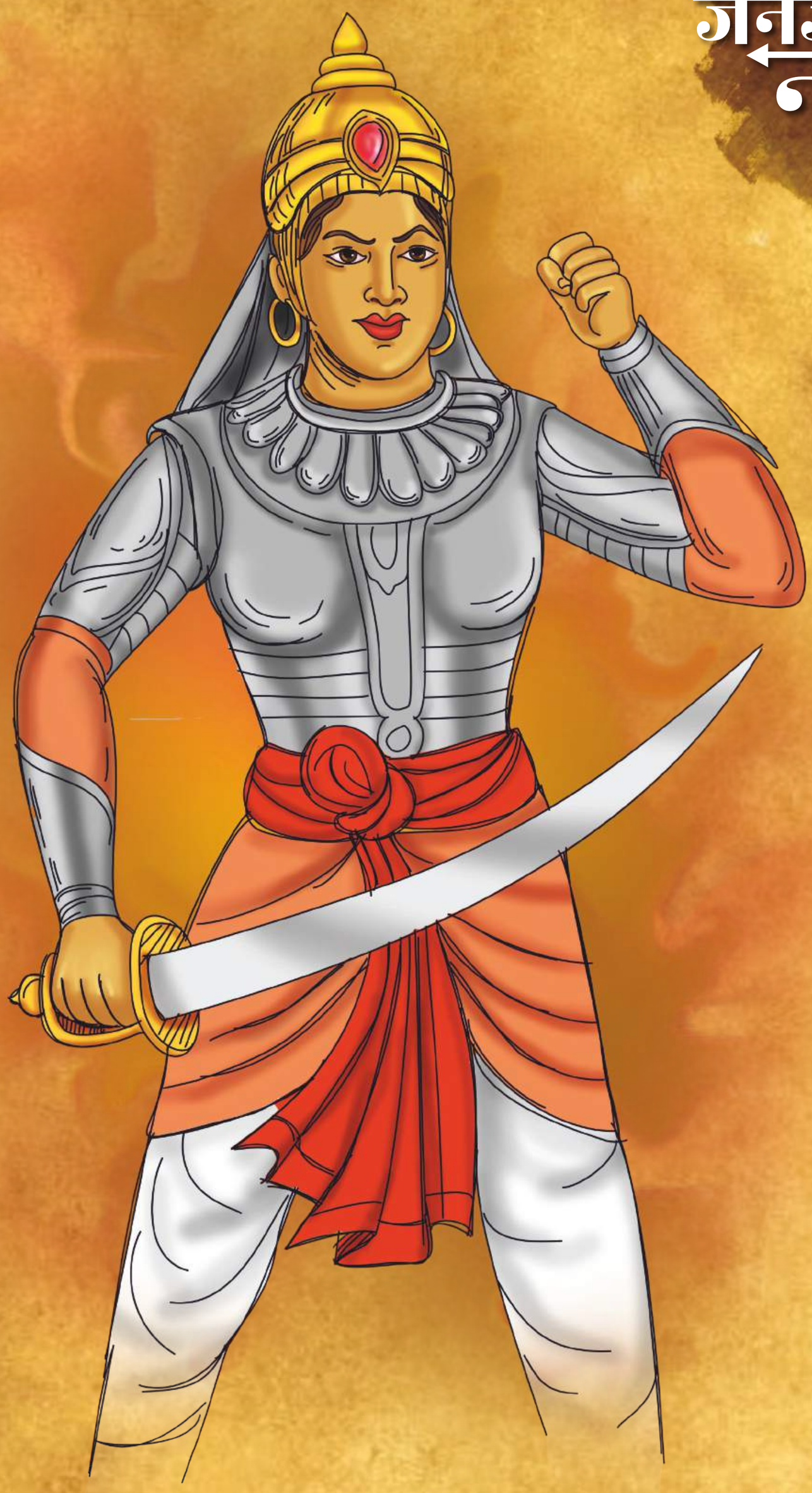

अमर बलिदानी

रानी दुर्गावती

जन्म : *5 अक्टूबर 1524, कालिंजर, बुंदेलखंड*

जनजाति : *गोंड* | ***बलिदान :*** *24 जून 1564*

रानी दुर्गावती अपने नाम के अनुरुप ही तेज, साहस और शौर्य का प्रतिमान थी। राजा दलपत शाह की महारानी दुर्गावती भारत की वह वीरांगना थी, जिसने मालवा के शासक बाज बहादुर, दिल्ली के सुल्तान शेरशाह सूरी और मुगल बादशाह अकबर को युद्ध के मैदान में नाकों चने चबवा दिए। अपने विवाह से पूर्व ही कुमारी दुर्गावती ने वर्ष 1545 में दिल्ली के सुल्तान शेरशाह को कालिंजर में पराजित कर मार गिराया। इसके बाद गढ़मंडला की महारानी के रूप में मालवा के सूबेदार बाज बहादुर को दो बार पराजित कर उसके राज्य को नेस्तनाबूत कर दिया। वर्ष 1564 में दुर्गावती ने मुगल सेना के सामने झुकने से इंकार कर स्वतंत्रता और अस्मिता के लिए युद्ध भूमि को चुना। इस युद्ध में घायल दुर्गावती ने स्वयं की कटार से अपने सीने पर प्रहार कर आत्मोत्सर्ग कर दिया।

अमर बलिदानी

सिनगी दई

जन्म : *रोहतासगढ़, बिहार*

जनजाति : *उराँव* | ***बलिदान :*** *तिथि उपलब्ध नहीं*

उराँव वीरांगना सिनगी दई का नाम सुनकर ही हम उनके शौर्य और पराक्रम से रोमांचित हो उठते हैं। उन्होंने अपने उरांव राज्य को उस समय संभाला जब संगठित सेना तुर्कों के साथ युद्ध में बिखर चुकी थी। लड़ने वाले पुरुष यौद्धा राष्ट्ररक्षण में प्राण न्यौछावर कर चुके थे। ऐसे समय में रोहतासगढ़ के राजा रुईदास की पुत्री राजकुमारी सिनगी दई ने योग्यता, वीरता, बुद्धिमत्ता, चातुर्य के साथ उराँव राज्य को संभाला। सिनगी दई ने महिलाओं को प्रशिक्षित करने के लिए उराँव समाज के शिकार उत्सव 'विशु सेन्दरा' को चुना। इस स्त्री सेना के बल पर मुस्लिम तुर्कों के आक्रमण को सिनगी ने विफल कर अपने शौर्य का परिचय दिया। वीरांगना सिनगी दई की याद में आज भी उराँव समाज "मुक्का सेन्दरा" का आयोजन करता है।

अमर बलिदानी

नन्तराम नेगी

जन्म : 1725, जौनसार, देहरादून, उत्तराखंड

जनजाति : जौनसारी | **बलिदान :** 14 फरवरी 1746

देहरादून के सुदूर पश्चिम में स्थित जौनसार जनजाति क्षेत्र के नन्तराम नेगी बाल्यकाल से ही अत्यंत ओजस्वी थे। जब मुगल सेनापति गुलाम कादिर खान ने देहरादून पर हमला किया और वहाँ से नाहन, हिमाचल प्रदेश की ओर बढ़ा, उस समय नाहन के राजा नाबालिग थे। उनकी माता ने अपने सेनापति को नन्तराम नेगी के पास भेजा। वीर नन्तराम ने नाहन की सेना के साथ मुगलों पर आक्रमण किया और उसके सेनापति का वध कर उसे परास्त किया। इस लड़ाई में नन्तराम नेगी और उनका घोड़ा दोनों घायल हो गए और मारकनडे की चढ़ाई में 14 फरवरी 1746 को मात्र 21 वर्ष की आयु में वीरगति को प्राप्त हुए।

अमर बलिदानी

तिलका मांझी

जन्म *: 11 फरवरी 1750, तिलकपुर, सुल्तानगंज,बिहार*
जनजाति *: संथाल | **बलिदान** : 13 जनवरी 1785*

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नायक थे तिलका मांझी। अद्भुत राजनीतिक मेधासंपन्न तिलका मांझी ने ही सर्वप्रथम संथालों को अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति की जानकारी दी। महावीर तिलका मांझी ने ब्रिटिश शासन को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिये पहाड़िया तथा संथाल सभी को साथ लेकर युद्ध प्रारम्भ किया। उन्होंने नारा दिया था "धरती हमारी है"। उन्होंने 13 जनवरी 1784 को, भागलपुर में नियुक्त ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी अगस्टस क्लीवलैंड का वध कर दिया। लेकिन संसाधनों की कमी के कारण वे युद्ध जारी नहीं रख पाए और अंततः पकड़े गए। तिलका मांझी को भागलपुर के चौराहे पर स्थित वटवृक्ष पर 13 जनवरी 1785 को फांसी दे दी गई। संथालों के लोकगीतों में बाबा तिलका मांझी का शौर्य और बलिदान आज भी जीवित है।

अमर बलिदानी तिलका मांझी को शत शत नमन!

अमर बलिदानी

तलक्कल चन्दु

जन्म : तोंडूरनाड़, वायनाड, केरल

जनजाति : कुरुचिया | **बलिदान :** 15 नवम्बर 1805

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में वायनाड के कुरुचिया जनजाति का योगदान अद्वितीय और अविस्मरणीय रहा है। इतिहास के इस स्वर्णिम पृष्ठ को जोड़ने में केरल के पड़सी राजा के साथ योगदान दिया था वीर जनजाति सेनानी तलक्कल चन्दु ने। अद्भुत शौर्यवान चन्दु ने अंग्रेजों को परास्त कर पनमरम किले को अधिकार में लिया। अंग्रेज सीधे युद्ध में चन्दु को कभी परास्त नहीं कर पाए। चन्दू के एक देशद्रोही संबंधी ने अंग्रेजों की सहायता की और चन्दु पकड़े गए। उन्हें 15 नवम्बर 1805 में पनमरम किले में फाँसी दी गयी।

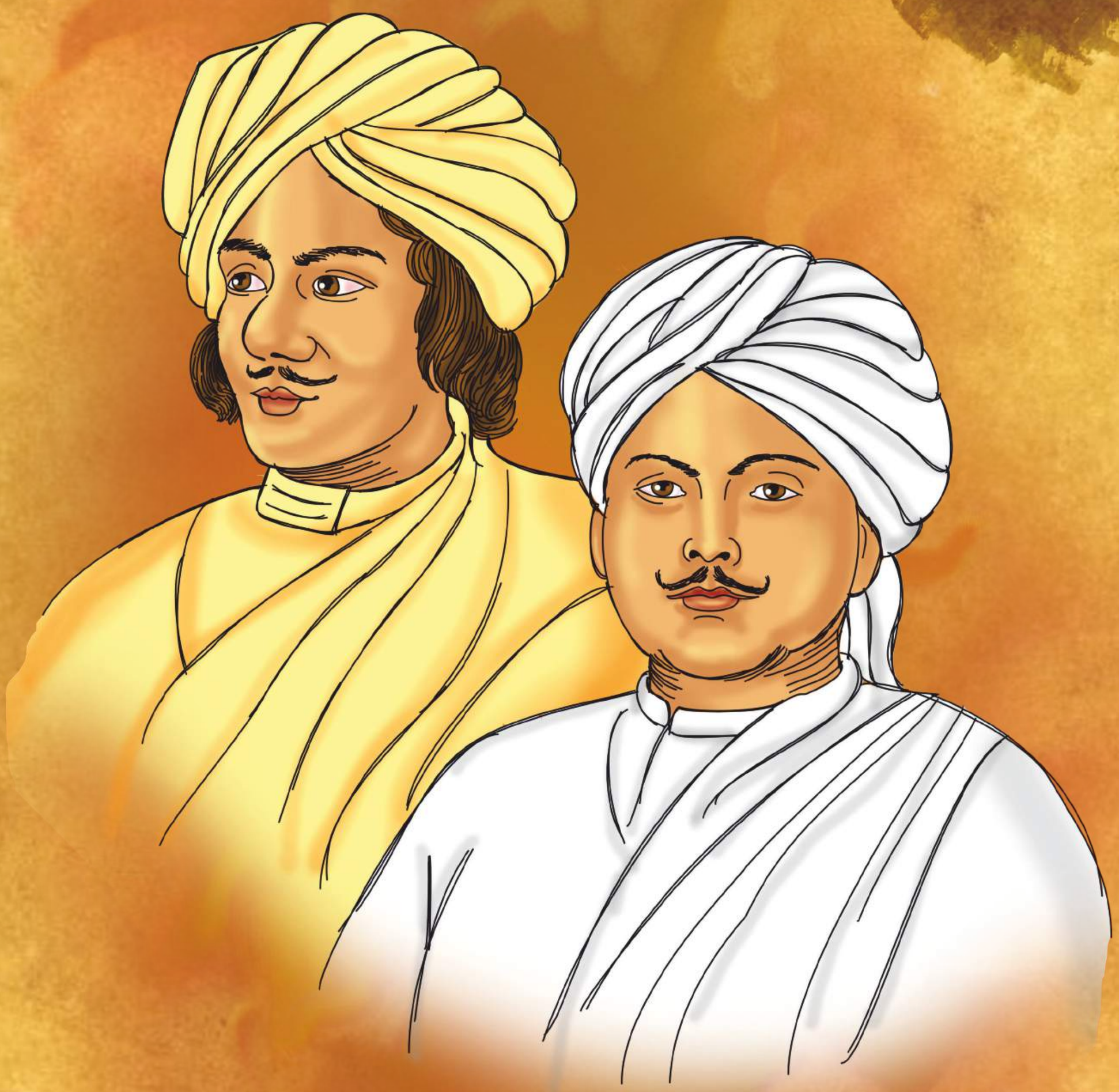

अमर बलिदानी

बख्तर साय - मुंडल सिंह

***जन्म** : बख्तर साय - नवागढ़, रायडीह, गुमला, झारखंड*
मुंडल सिंह - पहाड़ पनरी, गुमला, झारखंड
***जनजाति** : रौतिया खंगार | **बलिदान** : 04 अप्रैल 1812*

बख्तर साय और मुंडल सिंह देश की स्वाधीनता के लिए मर-मिटने वाले ऐसे योद्धा हैं, जिन्हें आज के इतिहास ने भुला दिया है। बख्तर साय झारखंड के गुमला जिले में नवागढ़ में वासुदेव कोना के जागीरदार थे। अंग्रेजों की लूट के विरोध में उन्होंने क्रांति का उद्घोष किया। अंग्रेजों के कहने पर तत्कालीन रातू महाराजा ने अपने दरबारी को उनसे कर वसूलने भेजा। बख्तर साय ने उसका वध कर दिया। रामगढ़ से अंग्रेजों ने बड़ी सेना भेजी। बख्तर साय के साथ मुंडल सिंह भी आ गए, जो कि उस समय पहाड़ पनरी नामक क्षेत्र के परगनैत थे। दोनों ने मिल कर स्थानीय जनजाति युवकों तथा किसानों की सेना तैयार की। अंग्रेजों को अनेक बार पराजित किया। फिर हजारीबाग से और बड़ी सेना भेजी गई। उन्होंने जनजाति क्रांतिकारियों को पराजित कर दिया। बख्तर साय और मुंडल सिंह पकड़े गए। उन्हें अंडमान भेज दिया गया और वहाँ फाँसी दे दी गई।

अमर बलिदानी

वीर बुधु भगत

जन्म : 17 फरवरी 1792, सिलगाईं, रांची, झारखंड

जनजाति : उराँव | बलिदान : 13 फरवरी 1832

कोल विद्रोह के नेतृत्वकर्ता तथा स्वाधीनता के स्वप्नद्दष्टा वीर बुधु भगत ने झारखंड में वर्ष 1828 में अंग्रेजों तथा उनके साहूकारों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा। गुरिल्ला युद्ध में निपुण बुधु भगत ने एक सक्षम सेना खड़ी की। अंग्रेजों को युद्ध में परास्त कर बंदी वनवासियों को मुक्त कराया। कई वर्षों तक वीर बुधु भगत अंग्रेजों को झारखंड के वनों से खदेड़ते रहे। 13 फरवरी 1832 को अंग्रेज काफी बड़ी सेना लेकर आए। उस भीषण युद्ध में बड़ी संख्या मे अंग्रेजों को मारने के बाद वीर बुधु भगत और उनके दोनों बेटे हलधर और गिरधर मातृभूमि की रक्षा में बलिदान हो गए।

अमर बलिदानी

उ तिरोत सिंग

***जन्म** : 1802, मैरंग, मेघालय*

***जनजाति** : खासी | **बलिदान** : 17 जुलाई 1835*

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अमर बलिदानी उ तिरोत सिंग मेघालय में खडसाफा सियोमेशिप के राजा थे। ईस्ट इंडिया कंपनी ने उनसे व्यापार हेतु सड़क बनाने की अनुमति मांग कर छल से उनके राज्य पर कब्जा करने का प्रयास किया। इसके विरोध में उ तिरोत सिंग ने खासी जनजाति योद्धाओं की अपनी सेना लेकर 4 अप्रैल 1829 को अंग्रेजों पर हमला बोल दिया। मिजोरम की पहाड़ियों में यह युद्ध चार वर्षों तक चलता रहा। अंत में एक देशद्रोही की सहायता से 9 जनवरी 1833 में अंग्रेजों ने राजा उ तिरोत सिंग को बंदी बना लिया। 17 जुलाई 1835 को ढाका में कंपनी के कारागार में वीर योद्धा राजा उ तिरोत सिंग की मृत्यु हुई।

अमर बलिदानी

राघोजी भांगरे

जन्म : 8 नवम्बर 1805, देवगांव, महाराष्ट्र
जनजाति : कोली | **बलिदान :** 2 मई 1848

अहमदनगर, महाराष्ट्र के क्रांतिवीर राघोजी भांगरे के पिता ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ किया था। उनके पिता को आजन्म कारावास की सजा देते हुए कालापानी भेज दिया गया था। युवा होने पर वीर राघोजी ने सह्याद्रि की पर्वतमालाओं में ईस्ट इंडिया कंपनी तथा उनके पिट्ठुओं से सीधा संघर्ष प्रारंभ किया। वर्ष 1845 के युद्ध में अंग्रेजों से सीधा संघर्ष हुआ और हजारों लोग मारे गए। अनेक साथी पकड़े गए। कुछ समय बाद पंढरपुर में राघोजी को पकड़ने में अंग्रेजों को सफलता मिली। 2 मई 1848 को ठाणे के कारागृह में भारत माता के इस सपूत को फाँसी दी गई।

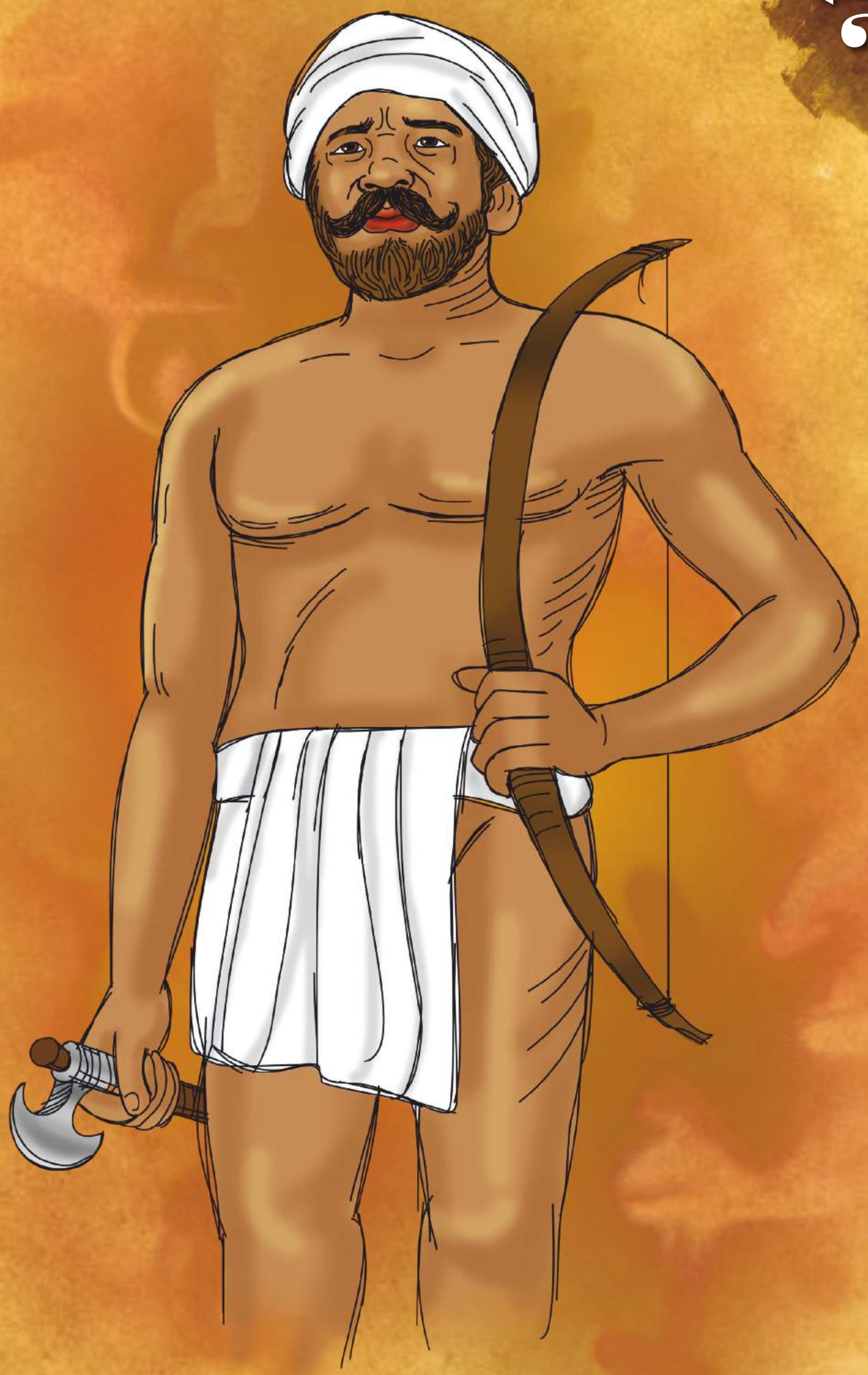

अमर बलिदानी

रेंडो मांझी

***जन्म** : उर्लाजानी, कालाहांडी, उड़ीसा*

***जनजाति** : कन्ध | **बलिदान** : तिथि उपलब्ध नहीं*

जनजाति समाज के स्वशासन को भारतीय राजाओं ने हमेशा मान्यता दी है। उस मान्यता को समाप्त करके जनजाति समाज से कर वसूलने के नाम पर लूटने का काम प्रारंभ किया अंग्रेजों ने। इसका जो देशव्यापी विरोध हुआ, उसमें उड़ीसा के कालाहांडी क्षेत्र में नेतृत्व किया रेंडो मांझी ने। कन्ध जनजाति के लोगों को लूटा और प्रताड़ित किया जाने लगा। रेंडो मांझी के नेतृत्व में विद्रोह हुआ और उसका दमन करने के लिए अंग्रेज मेजर कैम्पबेल को भेजा गया। मेरिया पर्व के दिन युद्ध हुआ और कई अंग्रेज सैनिक मारे गए, परंतु रेंडो मांझी को पकड़ लिया गया। कन्ध समाज का मनोबल तोड़ने के लिए रेंडो मांझी को बंदी के रूप में गाँव-गाँव घुमाया गया और फिर फाँसी देकर हत्या कर दी गई।

अमर बलिदानी

सिदो-कान्हू मुर्मू

जन्म : सिदो मुर्मू - 1815, कान्हू मुर्मू - 1820
भोगनाडीह, साहेबगंज, झारखंड
जनजाति : संथाल | बलिदान : 26 जुलाई 1856

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों से लिखा जाने वाला एक नाम युगल है सिदो-कान्हू मुर्मू। ये वास्तव में चार भाई थे – सिदो, कान्हू, चाँद और भैरों। चारों ही जनजाति समाज की अस्मिता, स्वाभिमान और स्वशासन के ज्वलंत प्रतीक और महान योद्धा थे। अंग्रेजों की लूट और अत्याचारों का विरोध करने के लिए उन्होंने 30 जून 1855 को हूल क्रांति की घोषणा की। उन्होंने एक वर्ष तक संघर्ष चलाया और बड़ी संख्या में अंग्रेजों का वध किया। कुछ देशद्रोहियों कारण वे पकड़े गए और 26 जुलाई 1856 को उनकी निर्ममता से हत्या कर दी गई।

अमर बलिदानी

वीरांगना फूलो-झानो मुर्मू

***जन्म** : भोगनाडीह, साहेबगंज, झारखण्ड*

***जनजाति** : संथाल | **बलिदान** : 1856*

फूलो-झानो सिदो-कान्हू की बहनें थीं। भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में पूरे परिवार ने अपनी आहुति दे दी थी। हूल क्रांति का संदेश सखुआ पेड़ की डाली के माध्यम से गाँव-गाँव में इन्हीं दोनों बहनों ने पहुँचाया था। दोनों बहनें घोड़ों पर बैठ कर गाँव-गाँव घूमा करती थीं। उन्होंने स्त्री-सेना का गठन किया और अंग्रेज सेना से छापामार तथा गुरिल्ला युद्ध किया। वर्ष 1856 में ऐसे ही एक युद्ध में लड़ते हुए उनका बलिदान हुआ।

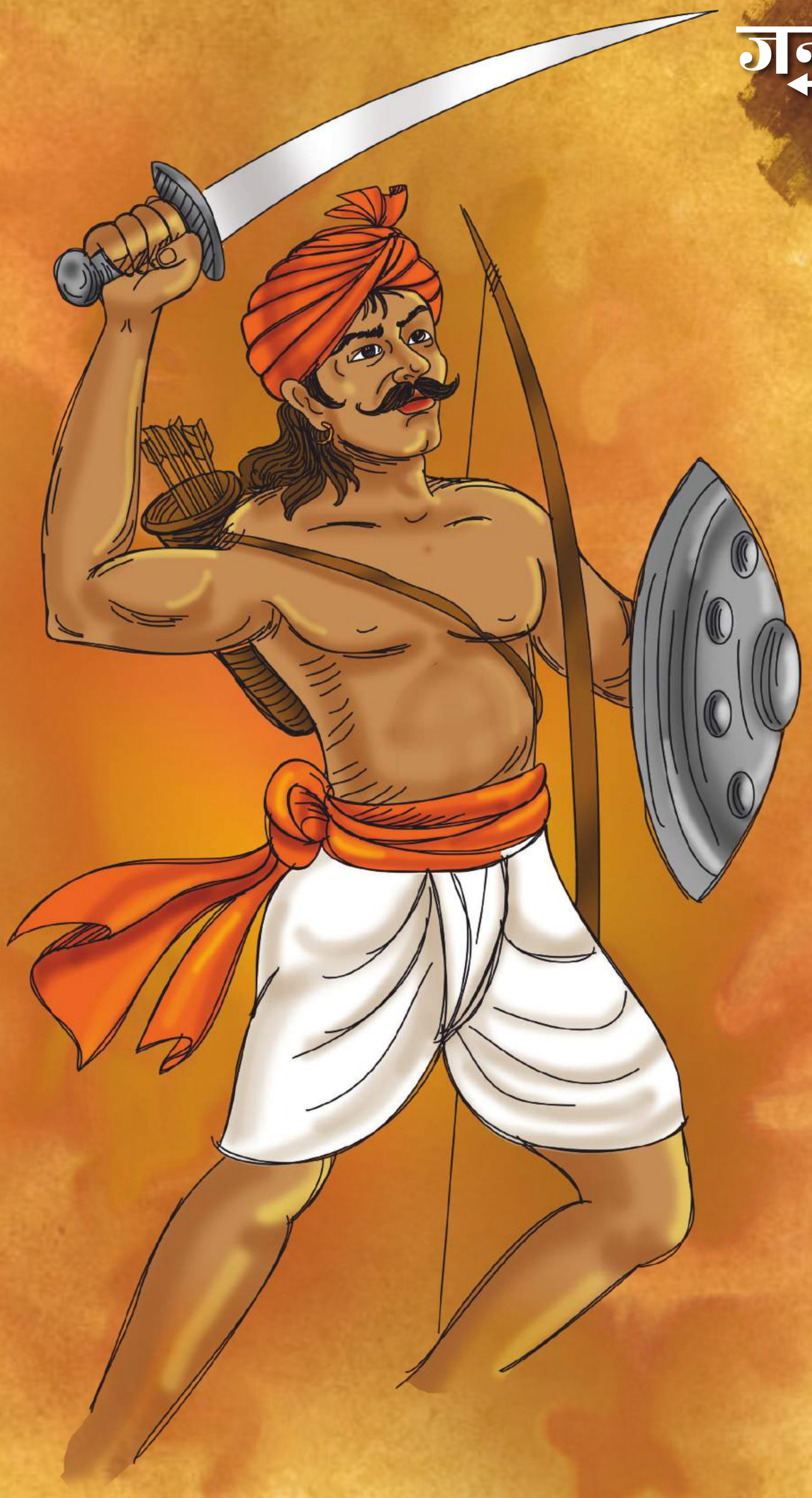

अमर बलिदानी

चक्र बिशोई

जन्म : 1823, चक्रगढ़, गंजाम, उड़ीसा

जनजाति : कंध | बलिदान : 1856

भारतीय स्वाधीनता समर का एक स्वर्णिम पृष्ठ उड़ीसा के कंध जनजाति के लोगों के नाम है। कंध जनजाति के लोगों ने वर्ष 1835 से लेकर 1869 तक संघर्ष किया। इस संघर्ष के प्रमुख नायक थे वीर चक्र बिशोई। बिशोई सभा में सभी ने स्वाधीनता संग्राम की शपथ लेते हुए अंगूठे को चीर कर रक्ततिलक किया। उस गाँव का नाम इस कारण टीकाबाली पड़ गया। वर्ष 1854 में कुरुमणिया दर्रे पर चक्र बिशोई की सेना ने अंग्रेजों को बुरी तरह पराजित किया। वर्ष 1856 में उन्हें किसी कार्यवश चाकपाड़ा आना पड़ा, जहाँ घात लगाए अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ लिया और उनकी हत्या कर दी।

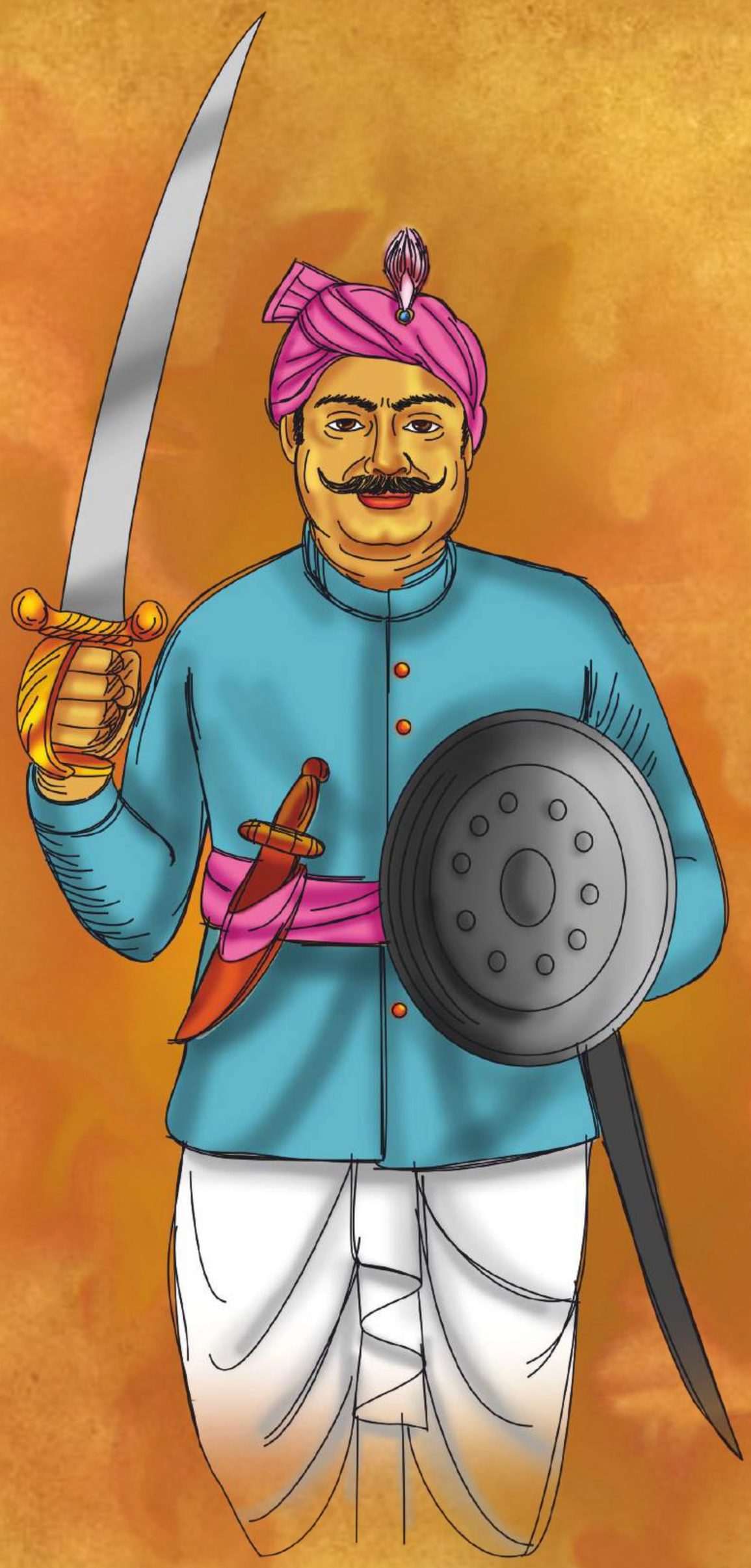

अमर बलिदानी

नारायण सिंह

***जन्म** : 1795, सोनाखान, रायपुर, छत्तीसगढ़*

***जनजाति** : बिंझवार | **बलिदान** : 10 दिसंबर 1857*

1857 की जनक्रांति के नायकों में एक प्रमुख नाम वीर नारायण सिंह का भी है। छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में बिंझवार जनजाति के नारायण सिंह सोनाखान के जमींदार थे। वर्ष 1856 में जब अंग्रेजों की अनाज जमाखोरी के कारण अकाल पड़ा तो उन्होंने अंग्रेजों के पिट्ठुओं के अनाज भंडारों के ताले तुड़वा दिये। अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ कर रायपुर जेल में डाल दिया। वे वहाँ से भाग निकले और अपनी सेना बनाई। 29 नवम्बर 1856 को स्मिथ के नेतृत्व वाली अंग्रेज सेना को पराजित किया। परंतु बाद में अंग्रेजों ने बड़ी फौज बुलाई और नारायण सिंह पकड़ लिए गए। 10 दिसम्बर 1857 को बीच चौराहे पर अंग्रेजों ने उनकी निर्मम हत्या कर दी।

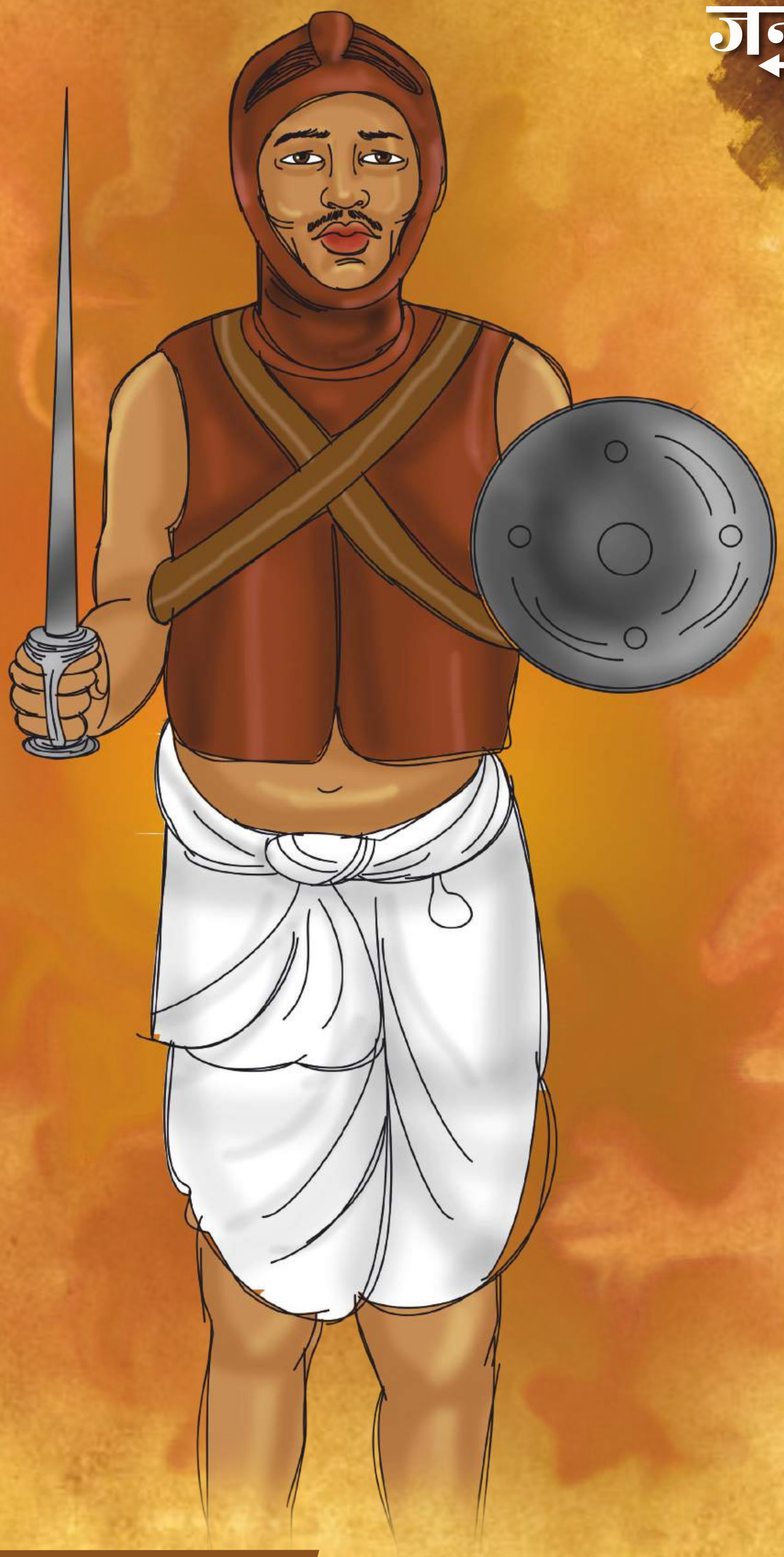

अमर बलिदानी

महुआ कोल

***जन्म** : मध्यप्रदेश*

***जनजाति** : कोल | **बलिदान** : तिथि उपलब्ध नहीं*

कोल जनजाति के शूरवीर तथा महापराक्रमी महासिंह को लोग महुआ कोल के नाम से जानते थे। महाभारत के भीम की ही भांति महासिंह काफी लंबे, बलिष्ठ और पराक्रमी थे। महासिंह प्रारंभ से ही गोंड राजा हिरोसिंह के साथ रहे। उन्होंने बुंदेला क्रांति में भाग लिया। बाद में 1857 की क्रांति में भी वे कूद पड़े। अंग्रेजों ने उन्हें जबलपुर जेल में कैद कर लिया, जहाँ रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई।

अमर बलिदानी

डेलन शाह

जन्म : 1802, मदनपुर, नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश

जनजाति : गोंड | बलिदान : 16 मई 1858

मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में गोंड जनजाति के वीर योद्धा डेलन शाह युवावस्था से ही अंग्रेजों से संघर्ष करने लगे थे। मात्र 16 वर्ष की आयु में उन्होंने चौरागढ़ में अंग्रेजों के किले पर आक्रमण कर दिया था। उन्होंने उनका झंडा यूनियन जैक भी उखाड़ फेंका परंतु गढ़ पर अधिकार नहीं कर पाए। पुनः सेना संगठित कर वर्ष 1836 में उन्होंने दूसरा प्रयास किया, पर सफल नहीं हुए। वर्ष 1857 की क्रांति में उन्होंने तीसरा प्रयास किया और चांवरपाठा तथा तेंदुखेड़ा दोनों को अंग्रेजों के कब्जे से स्वतंत्र करा लिया। 1858 में अंग्रेज बड़ी सेना लेकर आए और डेलन शाह को बंदी बना लिया। ढिलवार में वीर डेलनशाह को पीपल के पेड़ पर फाँसी दे दी गई।

अमर बलिदानी

नीलाम्बर-पीताम्बर

जन्म : चेमोसनया, गढ़वा, झारखण्ड

जनजाति : खरवार | **बलिदान :** 28 मार्च 1858

1857 की अमर क्रांति के इतिहास में नीलाम्बर-पीताम्बर का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिए। झारखंड के गढ़वा जिले के खरवार जनजाति के ये दोनों युवक प्रारंभ से ही अंग्रेजों के शासन के विरुद्ध थे। मई 1857 में राँची में क्रांति प्रारंभ हुई तो नीलाम्बर-पीताम्बर ने गढ़वा और पलामू में भी क्रांति का शंखनाद कर दिया। चेरो राजा ने अपनी सेना उनके नेतृत्व में क्रांति के लिए उतार दी। 21 जनवरी 1858 को पलामू के किले में कर्नल डॉल्टन और लेफ्टिनेंट ग्राहम की सेना के साथ भीषण युद्ध हुआ। कुछ देशद्रोहियों के कारण नीलाम्बर-पीताम्बर को पीछे हटना पड़ा और अंततः वे बंदी बना लिए गए। 28 मार्च 1858 को लेस्लीगंज में बरगद के पेड़ पर उन्हें फाँसी दी गई।

अमर बलिदानी

राजा शंकर शाह-रघुनाथ शाह

जन्म : *जबलपुर, मध्य प्रदेश*

जनजाति : *गोंड* | ***बलिदान :*** *18 सितम्बर 1857*

1857 के महासमर में अपनी आहूति देने वाले राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह, गोंडवाना के गोंड राजवंश के प्रतापी राजा थे। उन्होंने इस क्रांति में जबलपुर का नेतृत्व करते हुए अंग्रेजों से युद्ध की योजना बनाई। दोनों ही पिता-पुत्र अच्छे कवि थे। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपनी प्रजा में देशभक्ति का भाव भरा और अंग्रेजों का विरोध करने के लिए उन्हें तैयार किया। अंग्रेजों को गुप्तचरों से उनकी योजना का पता चल गया। 14 सितंबर 1857 को राजा के महल की तलाशी ली गई, जिसमें युद्ध की तैयारी के संबंध में लिखे गए पत्र तथा पिता-पुत्र द्वारा लिखी कविताएँ प्राप्त हुई। अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध पिता-पुत्र की तैयारियों को देखते हुए अविलंब 18 सितम्बर 1857 को अंग्रेजों ने पिता-पुत्र को अत्यंत निर्ममता से तोप से बांधकर उड़ा दिया।

अमर बलिदानी

बाबूराव शेडमाके

जन्म : *12 मार्च 1833, घोटगांव, चंद्रपुर, महाराष्ट्र*

जनजाति : *गोंड* | ***बलिदान :*** *21 अक्टूबर 1858*

देश के स्वातंत्र्य समर में वीर बाबूराव शेडमाके का बलिदान स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है। महाराष्ट्र के चंद्रपुर में उन्होंने अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले शोषण के खिलाफ युद्ध का शंखनाद किया। 24 सितंबर 1857 को उन्होंने जनजाति युवकों को एकत्र कर जंगोम सेना तैयार की। छह माह की तैयारी के बाद उन्होंने 7 मार्च 1858 को राजगढ़ पर हमला करके उसे स्वाधीन करा लिया। 20 मार्च को अंग्रेजों ने वापस हमला किया। बाबूराव ने उन्हें फिर पराजित किया। फिर 19 अप्रैल को वीर बाबूराव ने अंग्रेजों को तीसरी बार पराजित किया। 29 अप्रैल 1858 को बाबूराव ने अहेरी की चिचगुकी छावनी पर हमला किया। प्रत्यक्ष युद्ध में हराने में असमर्थ अंग्रेजों ने उन्हें छल से बंदी बनाया और 21 अक्टूबर 1858 को उन्हें फाँसी दे दी गई।

अमर बलिदानी

रघुनाथ सिंह मंडलोई

जन्म : बरूद, बड़वानी, मध्य प्रदेश

जनजाति : भिलाला | **बलिदान :** 8 अक्टूबर 1858

रघुनाथ सिंह मंडलोई मालवा क्षेत्र के क्रांतिकारी थे। वे आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे और अत्यंत वीर थे। 08 अक्टूबर 1858 को जब क्रांतिकारियों का दल रघुनाथ जी के गाँव पहुँचा तो ये उनके साथ मिल गए। बंड नामक स्थान पर इन्होंने अंग्रेजों से प्रचंड युद्ध किया। फिर ये जंगल की ओर बढ़ गए। रघुनाथ सिंह बीजापुर पहुँचे और वहाँ उन पर मेजर कीटिंग ने हमला कर दिया। युद्ध अनिर्णित रहा। अंततः मेजर कीटिंग ने वार्ता का प्रस्ताव रखा और धोखे से उन्हें बंदी बना लिया। अंततः कारागार में ही उनकी मृत्यु हुई।

अमर बलिदानी

वेंकटप्पा नायक

***जन्म** : सुरपुर, कर्नाटक*

***जाति** : बेराद | **बलिदान** : तिथि उपलब्ध नहीं*

कर्नाटक के सुरपुर के राजा वेंकटप्पा बाल्यावस्था से ही स्वतंत्रता के आग्रही थे। शासन संभालते ही उन्होंने अंग्रेज राजनीतिक प्रतिनिधि मडोल टेलर को वापस भेज दिया। उन्होंने आस-पास के सभी राजाओं का नेतृत्व किया और उन्हें अपनी देश-धर्म की रक्षा के लिए प्रेरित किया। फरवरी 1858 में अंग्रेज कैप्टन विलहेम के साथ उनका भीषण युद्ध हुआ। सुरपुर के कुछ अधिकारियों की गद्दारी के कारण राजा वेंकटप्पा को बंदी बना लिया गया। चार वर्ष तक कैद में रखने के बाद अंग्रेजों ने उनकी हत्या कर दी।

अमर बलिदानी

रणमत सिंह

जन्म : *1825, मनकहरी, सतना, मध्य प्रदेश*

जनजाति : *बघेल | **बलिदान :** 1859*

सतना, मध्य प्रदेश में 1857 की क्रांति का बिगुल फूंकने वाले सेनानी थे रणमत सिंह। ठाकुर रणमत सिंह ने अपना पूरा सैन्य संगठन जंगल में ही खड़ा किया। नागौद की अंग्रेजी रेजिडेंसी पर उन्होंने हमला किया और रेजिडेंट को मार दिया। भेलसाय के मैदान में उनका अंग्रेज और बुंदेलों की संयुक्त सेना से भीषण संघर्ष हुआ। रणमत सिंह ने स्थान बदल-बदल कर अंग्रेजों से युद्ध जारी रखा। अंततः रणमत सिंह ज्वाला देवी के मंदिर में पकड़े गए और आगरे के जेल में उन्हें फाँसी दे दी गई।

अमर बलिदानी

भागोजी नायक

जन्म : *नंदूर शिंगोटे नासिक, महाराष्ट्र*

जनजाति : *भील* | ***बलिदान :*** *1859*

भील जनजाति के शूरवीर क्रांतिकारी भागोजी नायक एक विलक्षण योद्धा थे। उनके नाम से अंग्रेज थर-थर कांपते थे। वर्ष 1855 में उन्हें कोली विद्रोह भड़काने के लिए अंग्रेजों द्वारा बंदी बना लिया गया था। मुक्त होने के वर्ष भर बाद ही वे 1857 के महासमर में कूद पड़े। नंदूर शिंगोटे की पहाड़ी पर उन्होंने भील योद्धाओं की सेना बनाई। नासिक पुणे मार्ग पर अंग्रेजों से उनका भीषण संघर्ष हुआ। उस घाट को आज भी भागो जी घाट कहा जाता है। 12 नवंबर, 1857 को पेठमहल पर आक्रमण कर हरसूल का खजाना लूट लिया। उन्होंने अंग्रेजों को कई आघात दिये। लगभग दो वर्षों तक निरंतर यह संघर्ष चलता रहा। वर्ष 1859 में अंग्रेज सेना को उनका पता लगा तो भागोजी और उनके साथियों को घेर कर सभी की निर्ममता से हत्या कर दी गई।

अमर बलिदानी

वीरांगना लीपा

जन्म : अंडमान निकोबार

जनजाति : ग्रेट अंडमानी | **बलिदान :** तिथि उपलब्ध नहीं

वीरांगना लीपा को हम अंडमान की पन्ना कह सकते हैं, जिसने मातृभूमि के सम्मान के लिए अपने गर्भस्थ शिशु को बलिदान कर दिया। अंडमान में 17 मई 1859 को अंग्रेजों और अंडमान की जनजातियों के बीच एबरडीन का युद्ध हुआ। 15 हजार अंडमानियों ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध प्रारंभ किया, परंतु अंडमानियों की सारी रणनीति की जानकारी लीपा के पति विश्वासघाती दूधनाथ तिवारी ने अंग्रेजों को दे दी। अंडमानी युद्ध हार गए। लीपा ने दूधनाथ के गर्भ को नष्ट करके अपने प्रखर राष्ट्रवाद का परिचय दिया।

अमर बलिदानी

खाज्या नायक

जन्म : सेंधवा, बड़वानी, मध्य प्रदेश

जनजाति : भील | बलिदान : 3 अक्टूबर 1860

राष्ट्रनायक पुंजा भील की परंपरा में ही एक बड़ा नाम खाज्या नायक का भी है। खाज्या नायक के पिता अंग्रेजों की सेवा में थे। पिता के बाद वह नौकरी खाज्या को मिली, परंतु उन्होंने वह नौकरी त्याग दी और 1857 के महासमर में अंग्रेजों के विरुद्ध कूद पड़े। भीलों की सेना बना कर उन्होंने अंग्रेजों से संघर्ष प्रारंभ किया और उन्हें जान-माल का भारी नुकसान पहुँचाया। अंग्रेजों ने उन्हें समझौता करने के लिए बुलाया, पर वे नहीं माने। 1857 की क्रांति के समाप्त हो जाने के बाद भी खाज्या अंग्रेजों से लड़ते रहे। 3 अक्टूबर 1860 को अंग्रेजों के इशारे पर सूर्य उपासना करते खाज्या नायक की निर्मम हत्या कर दी गई। अंग्रेज खाज्या नायक को कभी भी जीवित या मृत पकड़ नहीं पाए।

जनजाति नायक

अमर बलिदानी
रामजी गोंड

जन्म *: सोनखास, आदिलाबाद, तेलंगाना*

जनजाति *: गोंड |* ***बलिदान*** *: 9 अप्रैल 1860*

वर्तमान तेलंगाना, पूर्व में आंध्र प्रदेश के क्षेत्र में 1857 के महासंग्राम में योद्धा के रूप में खड़े हुए गोंड जनजाति के शूरवीर योद्धा रामजी गोंड। उन्होंने गोंड, मराठा, महार, रोहिल्ला आदि युवकों और ग्रामीणों की सेना तैयार की। रामजी ने अंग्रेजों को परास्त किया और निर्मल शहर तथा आसपास के क्षेत्र के सार्वभौम राजा हो गये। तीन वर्ष तक अपनी विलक्षण बुद्धि के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करते रहे। 9 अप्रैल 1860 को पूरी तैयारी करके कर्नल रॉबर्ट ने निर्मल शहर पर आक्रमण कर दिया। लगभग एक हजार रणबांकुरों को लेकर रामजी गोंड कर्नल रॉबर्ट की सेना पर टूट पड़े। उन्होंने कर्नल राबर्ट का सिर धड़ से अलग कर दिया। अंग्रेजों की फौज पीछे हटने लगी। तब तक बेलारी की सेना अंग्रेजों के पास पहुंच गई, निजाम की भी अतिरिक्त टुकड़ी आ पहुंची। निर्मल शहर को अंग्रेजों ने फिर से घेरा। रामजी गोंड पकड़े गये। उन्हें हजार फाँसी वाले वट वृक्ष पर फाँसी दे दी गई।

अमर बलिदानी रामजी गोंड को शत शत नमन!

अमर बलिदानी

यू कियांग नोंगबा

***जन्म** : जोवाई, मेघालय*

***जनजाति** : जयंतिया | **बलिदान** : 30 दिसंबर 1862*

वर्ष 1835 में अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाते हुए मेघालय के जयंतियांपुर को पहाड़ी और मैदानी भागों में बांट दिया। राज्य के शासक ने भयवश अंग्रेजों के भौगोलिक विभाजन को मान लिया परंतु राजा के इस निर्णय को जनता और मंत्री परिषद ने नकार दिया। युवा यू कियांग नोंगबा जनजाति वीरों की सेना बनाने में जुट गए। यू कियांग नोंगबा बंसी बजाकर लोकगीत गाते थे और गीतों के माध्यम से जनजाति समाज को तीर-तलवार उठाने के लिए प्रेरित करते थे। उन्होंने योजना बनाकर अंग्रेजों के सात सैनिक स्थानों पर हमला बोल दिया। वनवासियों की गुरिल्ला पद्धति का हमला लगभग 20 महीने चला। अंततः उनके ही एक साथी ने युद्ध में घायल हुए नोंगबा को पकड़वा दिया। 30 दिसंबर 1862 में पश्चिम जयंतिया हिल्स जिले के जोवाई शहर में सार्वजनिक रूप से उनकी हत्या कर दी गई।

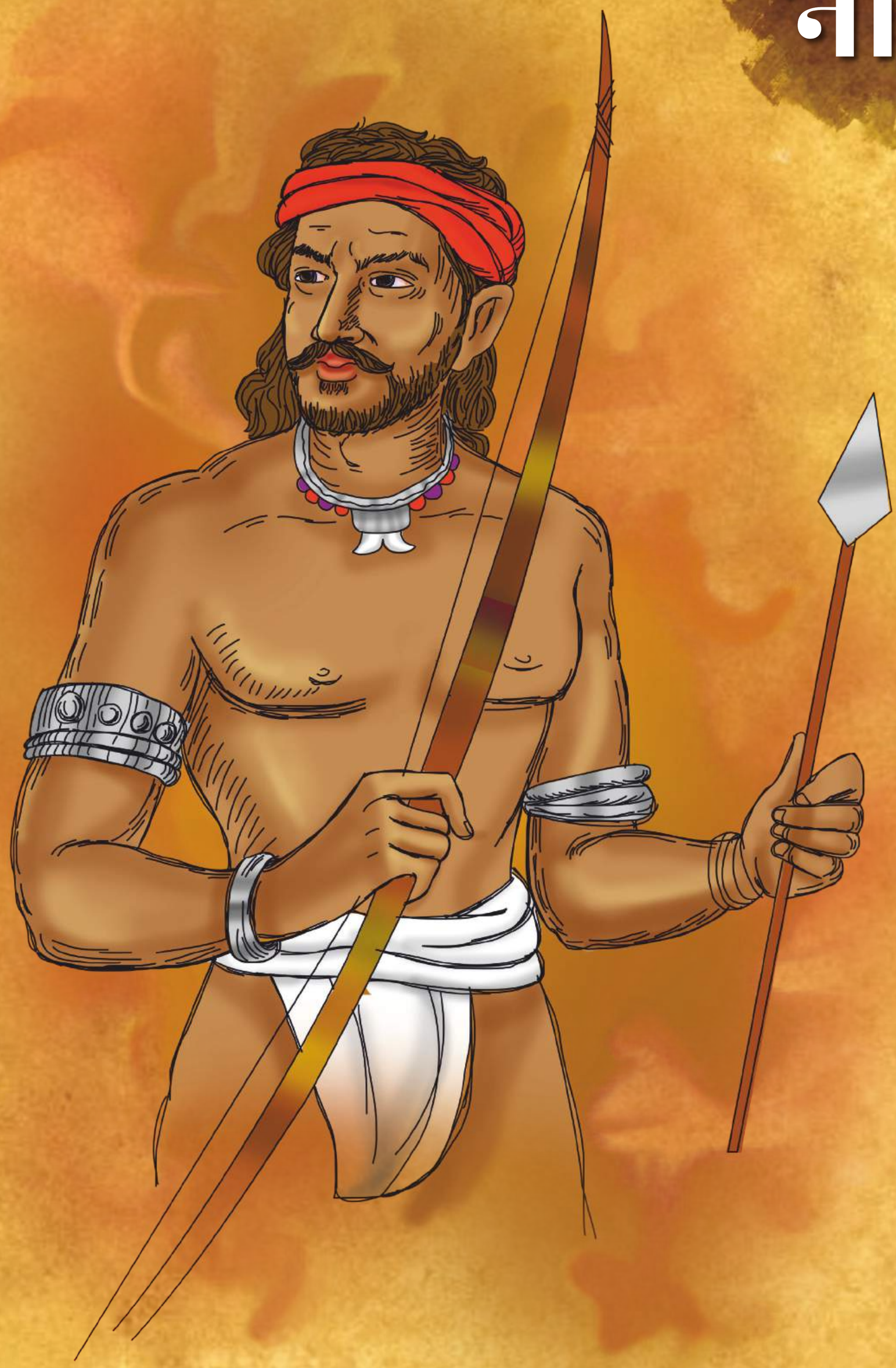

अमर बलिदानी

भीमा नायक

जन्म : *1840, पंचमोहली, बड़वानी, मध्य प्रदेश*

जनजाति : *भील* | ***बलिदान :*** *29 दिसंबर 1876*

मात्र 17 वर्ष की आयु में भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम में शूरवीरता दिखा कर पहला काले पानी की सजा पाने वाले क्रांतिकारी थे जनजाति युवक भीमा नायक। भीमा नायक ने मध्य भारत के निमाड़ क्षेत्र से खानदेश तक अंग्रेजी राज्य को चुनौती दी। 1857 में हुए अंबापानी युद्ध में युवक भीमा की महत्वपूर्ण भूमिका थी। तात्या टोपे जब निमाड़ आए थे तो भीमा नायक ने ही उन्हें नर्मदा पार करने में सहयोग किया था। अंग्रेज जब भीमा को सीधे नहीं पकड़ पाए तो उन्हें उनके ही किसी करीबी की मुखबिरी पर धोखे से कैद कर लिया। भीमा नायक की मृत्यु 29 दिसंबर 1876 को पोर्ट ब्लेयर में हुई।

अमर बलिदानी

तामा डोरा

जन्म : मलकानगिरि, उड़ीसा

जनजाति : कोया | **बलिदान :** 1880

1857 के महासमर की समाप्ति के बाद उड़ीसा के वनप्रांतों में अंग्रेजों की लूट के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ करने वाले जननायक थे कोयावीर तामा डोरा। वर्ष 1880 में मलकानगिरि थाने पर तामा डोरा ने वनवासी साथियों के साथ हमला किया और मात्र तीर-धनुष से बंदूकधारी सिपाहियों को मार कर मलकानगिरि को स्वाधीन कर दिया। 06 मई 1880 को अंग्रेजों ने दोबारा सेना भेजी। उसे भी तामा डोरा ने पराजित कर दिया। जुलाई 1880 में और बड़ी सेना भेजी गई। जनजाति क्रांतिवीरों को घेर कर मार डाला गया और तामा डोरा वहीं बलिदान हुए।

अमर बलिदानी

सुरेन्द्र साय

जन्म : *23 जनवरी 1809, खिंडा, संबलपुर, उड़ीसा*

जाति : *गोंड | **बलिदान :** 28 फरवरी 1884*

गोंड जनजाति के महानायक वीर सुरेंद्र साय 1857 के महासमर में उड़ीसा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। वर्ष 1827 में सम्बलपुर के महाराज की मृत्यु के बाद जब अंग्रेजों ने उनके राज्य पर कब्जा करना चाहा तो महान सैन्य प्रतिभा वाले वीर सुरेन्द्र साय ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया और रामपुर को मुक्त कराया। 1840 में उन्हें उनके साथियों के साथ अंग्रेजों ने कैद कर लिया। 17 वर्ष बाद 30 जुलाई 1857 को अद्भुत पराक्रम दिखाते हुए अपने क्रांतिकारी साथियों की मदद से हजीराबाग जेल पर उन्होंने कब्जा कर लिया और कैदियों को मुक्त कर दिया। वहाँ से निकलने के बाद संबलपुर में अंग्रेजों की सेना से उनका जबरदस्त संघर्ष हुआ और विजय प्राप्त हुई।सात वर्षों तक संबलपुर में वीर सुरेन्द्र साय का अधिकार रहा। 23 जनवरी 1864 को एक साथी के धोखे के कारण सुरेंद्र साय बंदी बना लिए गए और 28 फरवरी 1884 को कारागार में उनका प्राणांत हुआ।

अमर बलिदानी

टंट्या भील

__जन्म__ : 1842, बड़दा, पंधाना, खंडवा, मध्य प्रदेश

__जनजाति__ : भील | __बलिदान__ : 4 दिसंबर 1889

टंट्या भील 1878 से 1889 के बीच मध्य भारत के निमाड़ क्षेत्र के अद्वितीय नायक थे। उन्होंने 1857 के महासमर में अंग्रेजों द्वारा किए गए दमन के बाद भील समुदाय को संगठित किया। आम जनता उनको 'टंट्या मामा' कहकर उनका आदर करती थी। अंग्रेजों द्वारा लूटे गए धन को टंट्या मामा उनसे छीन कर वापस गरीबों में बांट दिया करते थे। प्रत्यक्ष संघर्ष में पकड़ पाने में असफल रहने पर घात लगाकर उन्हें पकड़ा गया। 4 दिसंबर 1889 को काफी प्रताड़ित करने के बाद उन्हें फाँसी दे दी गई।

अमर बलिदानी टंट्या भील को शत शत नमन!

अमर बलिदानी

शम्भूधन फूंगलो

***जन्म** : 1850, लोंगखोर, असम*

***जाति** : दिमासा | **बलिदान** : 12 फरवरी 1883*

1857 के महासमर की समाप्ति के बाद भी जनजाति समाज देश के विभिन्न हिस्सों में अंग्रेजों से स्वाधीनता की लड़ाई लड़ता ही रहा। इस राष्ट्रीय संघर्ष में असम का नतृत्व कर रहे थे वीर योद्धा शम्भुधन फूंगलो। उन्होंने दमासी युवाओं को संगठित किया। और उनके 2 दर्जन से ज़्यादा विभिन्न दल बनाकर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। शंभुधन फूंगलो ने मेजर बोयाड के नेतृत्व में लड़ रही अंग्रेजी सेना पर हमला किया और मेजर बोयाड को मार गिराया। अंग्रेजी सेना भाग खड़ी हुई। उन्होंने बराक नदी किनारे देवस्थानों पर अपने सैन्यदलों की छावनियां बनाई। आखिर इग्रालिंग में विश्राम करते वीर शुंभूधन फूंगलो को घेर लिया गया। पर वे पकड़े नहीं गए और अंत में 12 फरवरी 1883 को उनका बलिदान हुआ। शंभूधन फूंगलो आज भी देश के पूर्वोत्तर के युवा हृदयों पर राज करते हैं।

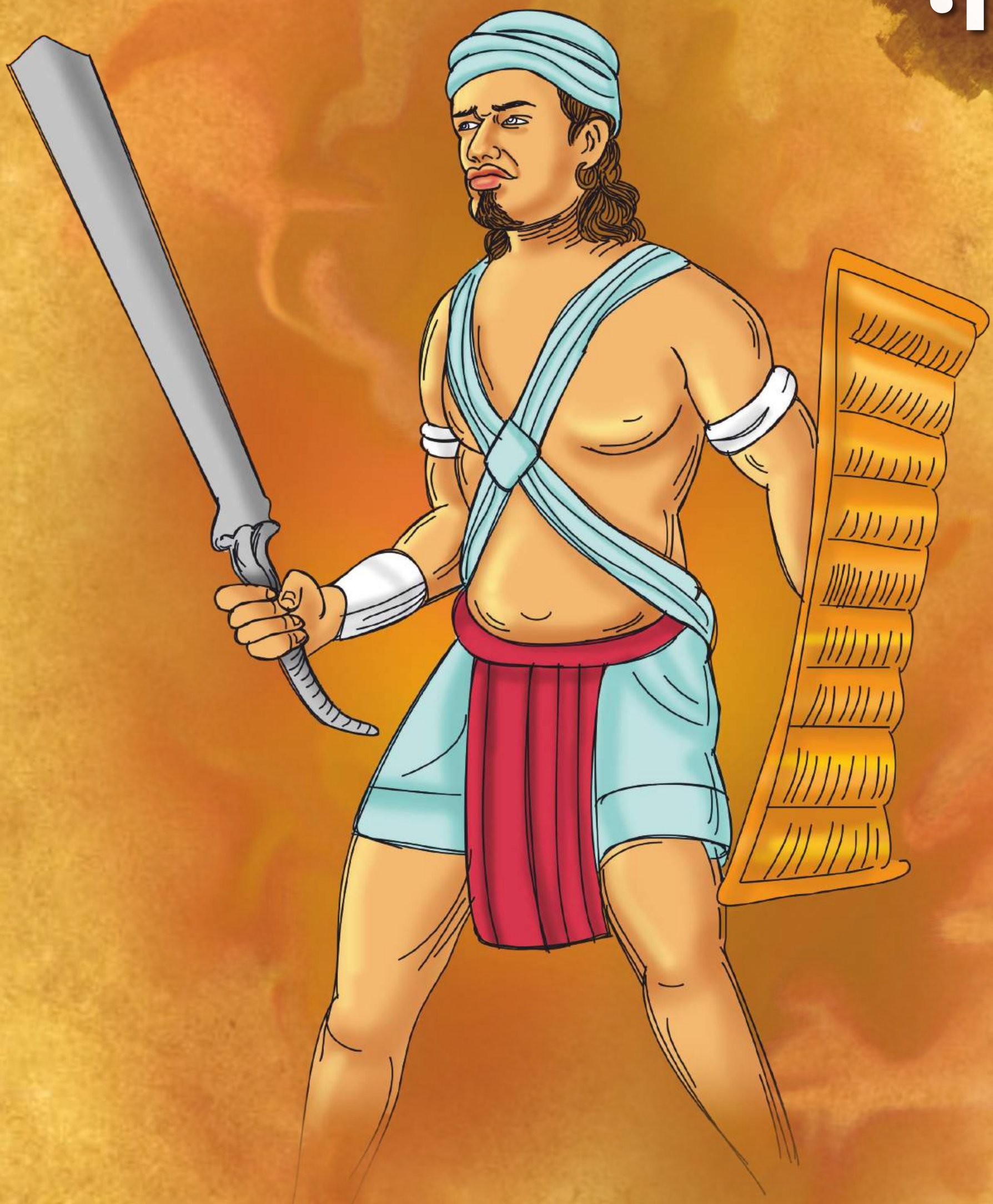

अमर बलिदानी

पा तोगेन एन संगमा

जन्म : *ईस्ट गारो हिल्स, मेघालय*

जाति : *गारो* | ***बलिदान :*** *12 दिसंबर 1872*

भारत के महान क्रांतिवीर पा तोगेन एन संगमा ने वर्ष 1872 में अंग्रेजों द्वारा मेघालय की गारो पहाड़ियों पर कब्जा करने के विरुद्ध स्थानीय गारो योद्धाओं का नेतृत्व किया। प्रारंभ से ही अपने कौशल और विवेक के कारण तोगेन गारो जनजाति के नेता माने जाते थे। अंग्रेजों के साथ लड़ाई में भी लोगों ने उन्हें ही नेता माना। आस-पास के गांवों ने उनके नेतृत्व में लड़ाई लड़ी। तोगेन संगमा के नेतृत्व में सैकड़ों सशस्त्र गारो वीरों ने अंग्रेजों से लोहा लिया। तोगेन संगमा रणभूमि में लड़ते-लड़ते 12 दिसम्बर 1872 को वीरगति को प्राप्त हुए। प्रतिवर्ष 12 दिसम्बर को उनकी स्मृति में गारो क्षेत्रों में स्वातंत्र्य सैनिक दिवस मनाया जाता है।

अमर बलिदानी

तेलंगा खड़िया

***जन्म** : 09 फरवरी 1806, गुमला, झारखंड*

***जाति** : खड़िया | **बलिदान** : 23 अप्रैल 1880*

देश के लिए सब कुछ अर्पित करने वाले हुतात्माओं में एक अग्रणी नाम है तेलंगा खड़िया का। तेलंगा बाल्यावस्था से ही अपने साथियों के साथ शस्त्र अभ्यास, कुश्ती आदि किया करते थे। 1831-32 की कोल क्रांति ने उन्हें काफी उद्वेलित किया और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के लिए लोगों को प्रेरित करना प्रारंभ कर दिया। इस पर अंग्रेजों ने उन्हें बंदी बना लिया। कुछ वर्ष बाद वे फिर से अपने गाँव लौटे और अंग्रेजों से लड़ने की तैयारी प्रारंभ कर दी। उनके बढ़ते प्रभाव को देखते हुए अंग्रेजों ने उनके ही एक साथी को पैसे देकर उन्हें मारने के लिए कहा। 23 अप्रैल 1880 को तेलंगा जब धरती माता को प्रणाम कर प्रार्थना कर रहे थे तब उन्हें गोली मार दी गई।

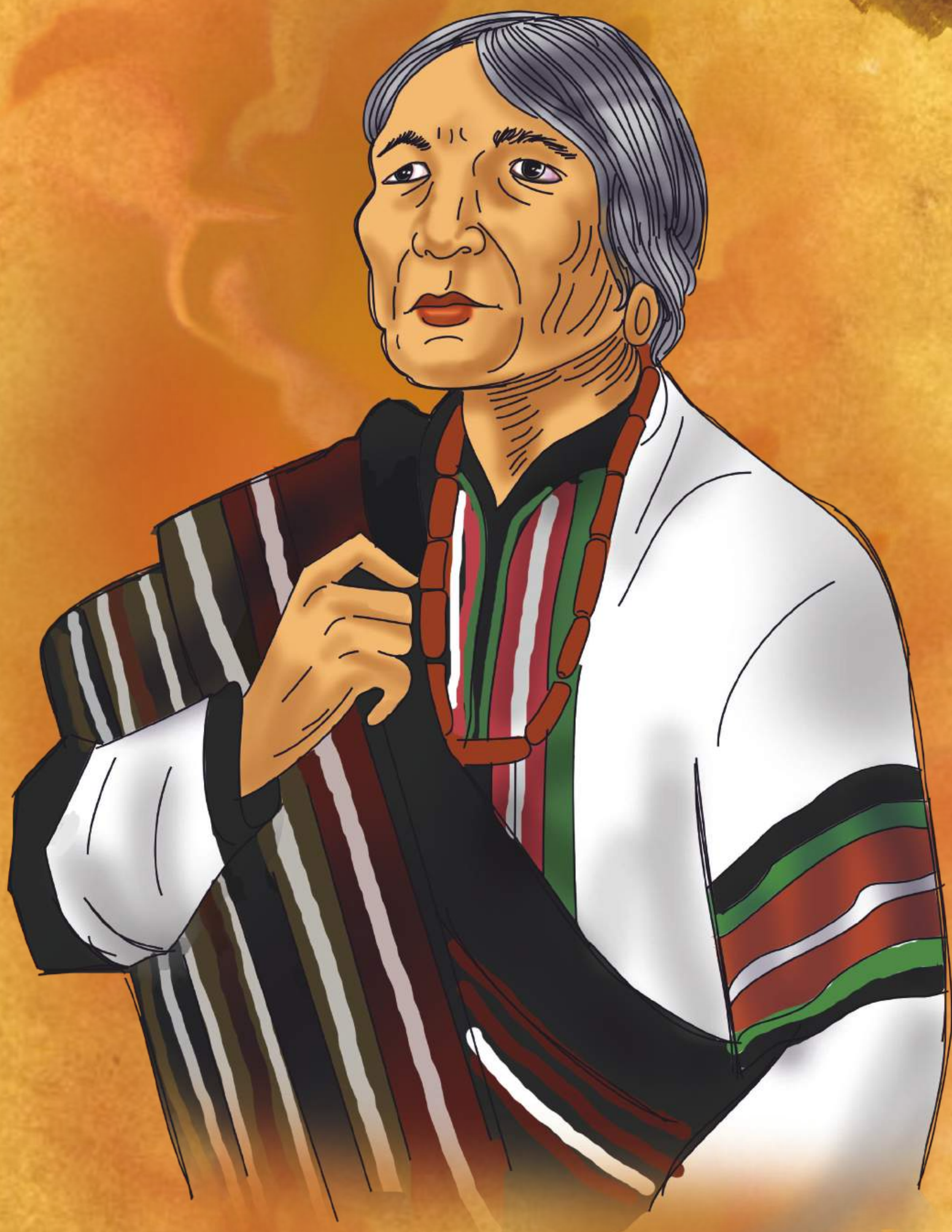

अमर बलिदानी

रानी रोपुइलियानी

***जन्म** : 1828, मिज़ोरम*

***जाति** : मिज़ो समुदाय | **बलिदान** : 3 जनवरी 1895*

मिजोरम के महान राजा लालसावुंगा की पुत्री रोपुइलियानी एक महान स्वतंत्रता सेनानी थीं। वर्ष 1890 में मिज़ो इलाकों पर अंग्रेजों के आक्रमण को चुनौती देते हुए लोगों को अंग्रेजों का आदेश ठुकराने के लिये प्रेरित किया। रोपुइलियानी ने अपने पति की मृत्यु के बाद राजा के अधिकार अपने हाथों में ले लिये और अपने गांव रालवावंग से शासन शुरु कर दिया। रानी रोपुइलियानी अंग्रेजों के विरुद्ध मिज़ो विद्रोह का शक्तिपुंज और मिज़ो लोगों को एकजुट करने का प्रतीक बन गईं। अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने के लिये कई अभियान चलाए। उनके साथ एक मुकाबले में लेफ्टिनेंट स्टुवर्ट दो अन्य ब्रिटिश सिपाहियों के साथ मारा गया। बाद में ब्रिटिश सैनिक, रानी रोपुइलियानी को गिरफ्तार करने में सफल हो गए। 8 अप्रैल 1894 को चटगांव जेल में उन्हें बंदी बनाकर ले जाया गया और वर्ष 1895 में कारागार में ही रानी रोपुइलियानी की मृत्यु हो गयी।

अमर बलिदानी

बिरसा मुण्डा

जन्म : 15 नवम्बर 1875, उलिहातु, खूंटी, झारखंड

जाति : मुंडा | बलिदान : 9 जून 1900

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायकों में किसी को ईश्वर का अवतार माना गया तो, वह थे महान क्रांतिवीर बिरसा मुंडा। भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज भगवान बिरसा मुंडा ने स्वाधीनता के लिए नारा दिया था 'अबुआ दिशोम अबुआ राज' यानी 'अपना देश अपना राज'। स्वराज के इस घोष के साथ उन्होंने उलगुलान आंदोलन प्रारंभ किया। भगवान बिरसा मुंडा एक राष्ट्रीय नायक थे जिनका प्रभाव झारखंड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, राजस्थान जैसे राज्यों में भी था। स्वराज्य तथा स्वधर्म की रक्षा के लिए वे आजीवन संघर्षरत रहे। उन्हें 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर के जंगल में एक भीषण मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया गया और कैद में ही उनकी मृत्यु हो गई।

अमर बलिदानी

वीर गुंडाधुर

***जन्म** : नेतनार, बस्तर, छत्तीसगढ़*

***जाति** : धुरुवा | **बलिदान** : तिथि उपलब्ध नहीं*

छत्तीसगढ़ के तात्या टोपे के नाम से प्रसिद्ध वर्ष 1910 की 'बूमकाल क्रांति' के वीर नायक गुंडाधुर एक महान योद्धा, अद्भुत संगठनकर्ता और प्रखर वक्ता थे। बस्तर के राजा ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। उन दोनों के अत्याचारों के विरोध में बूमकाल का आयोजन किया गया। गाँव-गाँव में लाल मिर्च और आम की टहनी के माध्यम से क्रांति का संदेश फैलाया गया। उन्होंने अपूर्व वीरता का परिचय देते हुए अंग्रेजों को इतना आतंकित कर दिया कि वे गुफाओं में जा छिपे। कई सारे युद्धों के बाद वीर गुंडाधुर के साथी रानी सुवर्ण कुंवर तथा लाल कालिंदर सिंह बंदी बना लिए गए। अत्यंत प्रयासों के बाद भी वीर गुंडाधुर कभी भी अंग्रेज़ों द्वारा पकड़े नहीं जा सके।

अमर बलिदानी

मादरी कालो

जन्म : *1848, सुंदरगढ़, उड़ीसा*

जाति : *भुइयां | **बलिदान :** 1914*

छोटानागपुर राज्य के गांगपुर राज्य में जन्मे मादरी कालो एक जमींदार थे। अंग्रेजों द्वारा 'कर' के नाम पर की जाने वाली लूट का विरोध करने के लिए उन्होंने हथियार उठाया। रेलपथ का निर्माण करने के लिए अंग्रेज, जनजाति समाज से बेगारी करवाते थे। वर्ष 1894 में मादरी कालो ने उसका भी विरोध किया और नारा दिया – अधिक कर नहीं देंगे, बेगारी काम नहीं करेंगे, प्रजा पर जुल्म नहीं होने देंगे। उनके साथ भुइयां, गण्ड, खड़िया आदि सभी समुदाय के लोग थे। जब कई वर्षों के प्रयास के बाद भी मादरी कालो को पराजित नहीं किया जा सका तो मादरी कालो के एक साथी के विश्वासघात करने पर उन्हें बंदी बना लिया गया। जेल में उन्हें इतना प्रताड़ित किया गया कि उनके दोनों पैर अशक्त हो गए। 1910 में उन्हें मुक्त किया गया और 1914 में उनका प्राणांत हो गया।

अमर बलिदानी मादरी कालो को शत शत नमन!

अमर बलिदानी

जतरा टाना भगत

जन्म : 1888, चिंगरी नावटोली, गुमला, झारखंड

जाति : उराँव | बलिदान : 1916

भगवान बिरसा मुंडा की क्रांति को आगे बढ़ाने वाले जतरा भगत को भारत में सत्याग्रह का प्रणेता कहा जा सकता है। उन्हें गुमला के लोग ससम्मान 'टाना भगत' कहते थे। वर्ष 1921 में उनके आह्वान पर वीर उराँव जनजाति युवाओं ने अंग्रेजों को लगान देने और उनके लिए मजदूरी करने से इंकार कर दिया। टाना भगत के नेतृत्व में वे अंग्रेजों को देश से बाहर करने के गीत गाते थे, कीर्तन करते थे। वर्ष 1916 में टाना भगत का एक ऐसे ही आंदोलन के दौरान प्राणांत हो गया।

अमर बलिदानी

नानक जी भील

जन्म : 1890, बरड़, राजस्थान

जाति : भील | **बलिदान :** 13 जून 1922

अमर हुतात्मा नानक भील बचपन से ही निडर,साहसी और एक जागरुक व्यक्ति थे। नानक भील गोविंद गुरु और मोतीलाल तेजावत द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन से काफी प्रभावित थे। वीर नानक भील ने अपने क्षेत्र में झंडा गीतों के माध्यम से अंग्रेजों का विरोध किया और अपने क्षेत्र के आम लोगों को अंग्रेजों का विरोध करने के लिए प्रेरित किया। 2 अप्रैल 1923 को बूंदी क्षेत्र के डाबी गांव में किसानों की बैठक पर अंग्रेज पुलिस ने अचानक से गोलीबारी कर दी। इससे बैठक में आए किसानों में भगदड़ मच गई लेकिन नानक भील ने झंडा लहराते हुए अंग्रेजों का विरोध किया। इसी दौरान वहां पुलिस ने नानक भील को सीने पर गोली मार दी और इस प्रकार भारत देश का एक वीर सपूत वीरगति का प्राप्त हो गया।

अमर बलिदानी

अल्लूरी सीताराम राजू

***जन्म** : 4 जुलाई 1897, मोगल्लु, गोदावरी, आंध्रप्रदेश*

***बलिदान** : 7 मई 1924*

अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति के अप्रतिम योद्धा थे अल्लूरी सीताराम राजू। मात्र 24 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने अंग्रेजों से सीधी लड़ाई प्रारंभ कर दी। वे गुरिल्ला पद्धति के अद्भुत विशेषज्ञ थे। संपूर्ण रम्पा क्षेत्र में उनका यह संघर्ष व्यापक हो गया था। दिसंबर 1922 को सोते हुए राजू पर अंग्रेजों ने हमला किया परंतु राजू ने ऐसा प्रतिकार किया कि दोनों अंग्रेज लेफ्टिनेंट हताहत हो गए। राजू ने केवल युद्ध ही नहीं किया अपितु सुशासन की व्यवस्था भी दी। उनकी बनाई ग्राम पंचायतें शासन चला रही थीं। 6 मई 1924 को उन्होंने अंग्रेजों की सुसज्जित सेना को पराजित किया। 7 मई को उन्हें स्नान करते समय धोखे से पकड़ लिया गया और पेड़ से बाँधकर निर्ममता से उनकी हत्या कर दी गई।

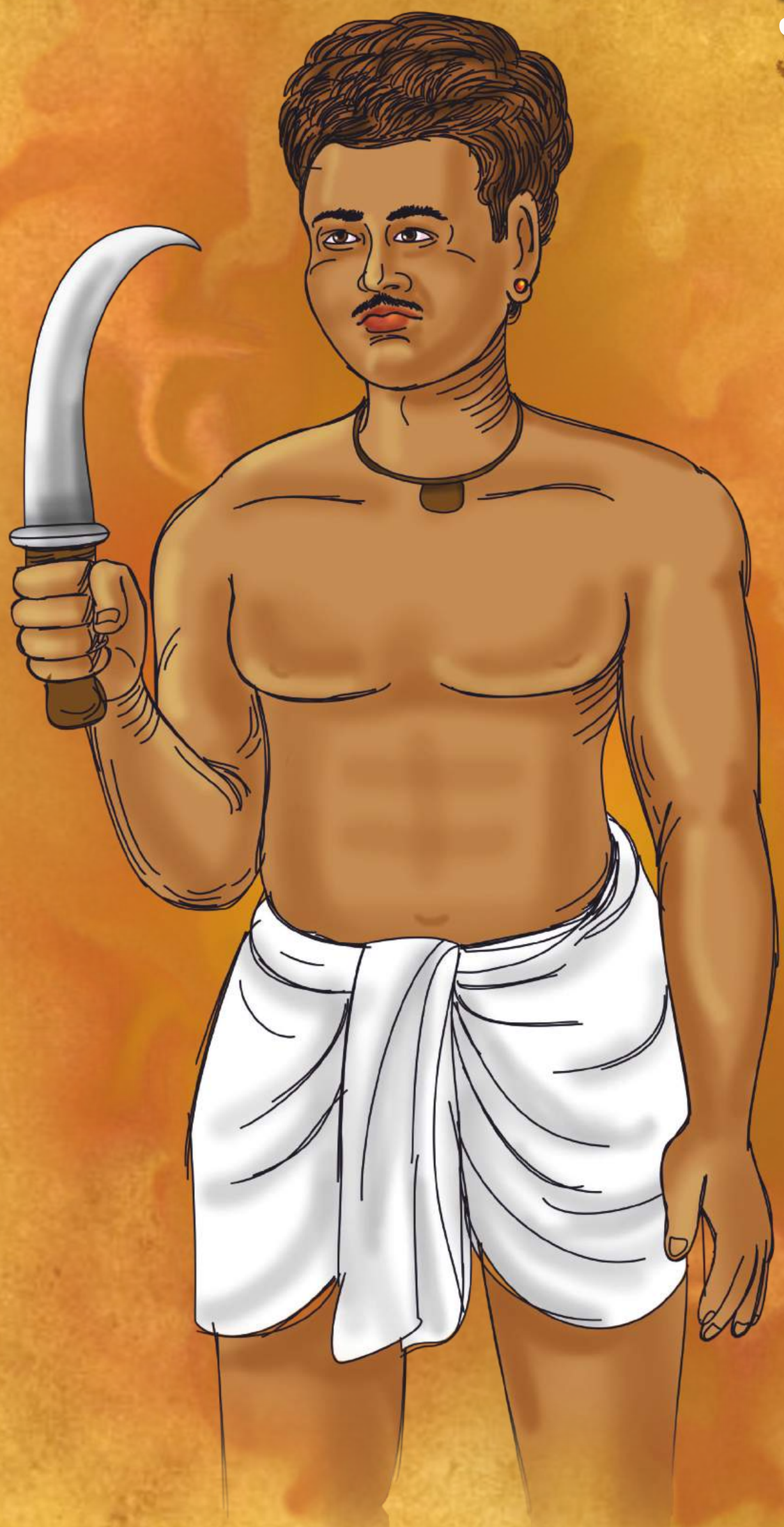

अमर बलिदानी

नग्य महादया कातकरी

***जन्म** : चिरनेर, रायगढ़, महाराष्ट्र*

***जनजाति** : कातकरी | **बलिदान** : 25 सितम्बर 1930*

रायगढ़ के गौरवशाली इतिहास में महाड़ सत्याग्रह, गोवा मुक्ति लढ़ा, जंजीरा मुक्ति लढ़ा, चरी की किसान हड़ताल के समान ही चिरनेर सत्याग्रह भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। नग्य महादया कातकरी ने चिरनेर सत्याग्रह का नेतृत्व किया। चिरनेर में असंतोष का कारण था अंग्रेजों के जनजाति लोगों की आजीविका के साधनों पर प्रतिबंध लगाने वाले एवं जंगल से वनोपज संग्रहण पर रोक के अधिनियम। 25 सितंबर 1930 को उरण तालुका के चिरनेर में जंगल सत्याग्रह का आरम्भ हुआ। नग्य महादया कातकरी के नेतत्व में हजारों किसान, अक्कादेवी पहाड़ी पर अवज्ञा करने के लिए एकत्र हुए। अंग्रेजों ने गोलीबारी आरम्भ कर दी। अंग्रेजी पुलिस की इस कार्रवाई में नग्य महादया कातकरी के साथ अनेक सत्याग्रही वीरगति को प्राप्त हुए।

अमर बलिदानी

हाइपौ जादोनांग

***जन्म** : 1905, मणिपुर*

***जनजाति** : रोंगमई नागा | **बलिदान** : 29 अगस्त 1931*

मणिपुर के हाइपौ जादोनांग एक आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता थे, जिन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के चंगुल से आजादी के लिए लड़ाई लड़ी थी। उन्होंने हराक्का सेना की स्थापना की। इसमें पुरुष और महिलाएं दोनों ही शामिल थे, जो सैन्य रणनीति, हथियार और टोही मिशन में अच्छी तरह से प्रशिक्षित थे। उन्होंने तमेङ्लोङ में अंग्रेजी राज्य को समाप्त कर जेलियांरोंग यानी स्थानीय स्वशासन स्थापित कर दिया। उन्हें वर्ष 1928 में अंग्रेजों ने बंदी बनाया, परंतु शीघ्र ही छोड़ना भी पड़ा। 29 अगस्त 1931 को उन्हें दोबारा पकड़ लिया गया और आम के पेड़ पर फाँसी दी गई।

अमर बलिदानी

गोविन्द गुरु

जन्म : 1858, बाँसिया, डूंगरपुर, राजस्थान

जाति : बंजारा | **बलिदान :** 30 अक्टूबर 1931

भारत में अंग्रेजी शासन के खिलाफ सबसे सक्षम आन्दोलन, 19वीं शताब्दी के आखिरी दशक में भील समुदाय के बीच से उभरा। इस आन्दोलन का नेतृत्व गोविन्द गुरु ने किया। उन्होंने भीलों को संगठित करने के लिए 1883 में 'सम्प सभा' की स्थापना की। वे लगभग 20 वर्षों तक राजस्थान, गुजरात एवं मध्यप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में जनजाति समाज के साथ अंग्रेजी शासन के ख़िलाफ़ और स्वशासन स्थापित करने के लिए संघर्ष करते रहे, 11 नवंबर 1913 को मानगढ़ पहाड़ी पर उन्होंने एक विशाल समागम आयोजित किया जिसमें हजारों भील एकत्रित हुए। इस समागम पर अंग्रेजों ने कायरता दिखाते हुए अत्यंत निर्ममता से गोलियां चलाईं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 1500 से अधिक भील जनजाति के लोग बलिदान हुए। इस प्रकार का बलिदान इतिहास में दुर्लभ ही देखने को मिलता है। कालांतर में 30 अक्टूबर 1931 को गोविंद गुरु का देहांत हो गया।

अमर बलिदानी गोविन्द गुरु एवं हजारों भील बांकुरों को शत शत नमन!

अमर बलिदानी

रानीमाँ गाइदिन्ल्यू

***जन्म** : 26 जनवरी 1915, मणिपुर*

***जाति** : नागा | **बलिदान** : 17 फरवरी 1993*

नागालैंड में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति का नेतृत्व करने वाली रानीमाँ गाइदिन्ल्यू एक आध्यात्मिक एवं राजनीतिक नेत्री थी। उनको भारत सरकार द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में सन 1982 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। रानी गाइदिन्ल्यू के शौर्य व पराक्रम के कारण उन्हें नागालैण्ड की रानी लक्ष्मीबाई कहा जाता है। मात्र 16 वर्ष की आयु में उन्होंने 4000 नागा सैनिकों का नेतृत्व किया और अपने छापामार हमलों से अंग्रेज सेना की नींद उड़ा दी। 17 अप्रैल 1932 को अचानक हुए हमले में वे पकड़ी गईं और 14 वर्ष उन्हें जेल में रहना पड़ा। वे वर्ष 1946 में मुक्त हुईं और देश की स्वाधीनता के बाद उन्होंने नागा संस्कृति की रक्षा के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया। 17 फरवरी 1993 को उनका देहांत हुआ।

अमर बलिदानी

कोमराम भीम

जन्म : 22 अक्टूबर 1901, संकेपल्ली, तेलंगाना

जाति : गोंड | बलिदान : 1940

देश में जल, जंगल और जमीन का नारा देने वाले प्रथम व्यक्ति थे, कोमराम भीम। हैदराबाद के निजाम आसफ अली और अंग्रेजों के दमनकारी शासन के खिलाफ कोमराम भीम ने भीषण संघर्ष किया। वे अल्लूरी सीताराम राजू से काफी प्रभावित थे। वर्ष 1926 से लेकर 1940 तक उन्होंने अंग्रेजों तथा निजाम के साथ निरंतर युद्ध किया। वर्ष 1940 में आश्विन पूर्णिमा के दिन हुए एक जबरदस्त युद्ध में वे वीरगति को प्राप्त हुए। जोड़ेघाट पहाड़ के संपूर्ण क्षेत्र के सभी लोग चाहे वे जनजाति हों या अन्य, कोमराम भीम को अपना नेता मानते थे।

अमर बलिदानी

मर्री कामय्या

***जन्म** : गरुडापल्ली, विशाखापट्टनम, आंध्रप्रदेश*

***जनजाति** : कोंडा दोरा | **बलिदान** : 5 मई 1959*

आंध्र प्रदेश के वनप्रदेशों से निकले एक विलक्षण योद्धा थे मर्री कामय्या। उन्होंने विशाखापट्टनम जिले में वर्ष 1930 के दशक में अंग्रेजों की लूट और शोषण का विरोध प्रारंभ किया। उन्होंने सात वर्षों तक अविजित रह कर अंग्रेजों को वनों पर कब्जा करने से रोका। वनों के अधिकार को लेकर सशस्त्र युद्ध छेड़ने वाले इस क्रांतिवीर को अंग्रेजों ने अंततः वर्ष 1940 में गिरफ्तार कर लिया और असहनीय यातनाएँ दी। 5 मई 1959 को उनका प्राणांत हुआ।

अमर बलिदानी
लक्ष्मण नायक

जन्म : 22 नवम्बर 1899, कोरापुट, टेंटुलिगमा, उड़ीसा
जाति : भूमिया | बलिदान : 29 मार्च 1943

ओडिशा के भूमिया जनजाति के अप्रतिम स्वाधीनता सेनानी लक्ष्मण नायक मलकानगिरि के गाँधी के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने उद्घोष किया था कि यदि सूर्य और चंद्रमा सत्य हैं, तो भारत स्वतंत्र होगा, यह भी सत्य है। अंग्रेजों से संघर्ष करने के लिए उन्होंने क्रांतिकारी दल का निर्माण किया था। उनकी नेतृत्व क्षमता को देख कर कांग्रेस ने उन्हें अपने साथ शामिल करने का प्रयास किया। स्वयं महात्मा गाँधी उनसे मिले। 21 अगस्त 1942 को उन्होंने एक शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया। प्रदर्शन पर पुलिस ने गोलियां बरसाईं और सात लोग मारे गए। अंग्रेजों ने उन्हें झूठे आरोप लगा कर बंदी बना लिया और 29 मार्च, 1943 को उन्हें फाँसी दे दी गई।

अमर बलिदानी लक्ष्मण नायक को शत शत नमन!

अमर बलिदानी

हुतात्मा केसरी चंद

***जन्म** : 1 नवम्बर 1920, जौनसार, उत्तराखंड*

***जाति** : जौनसारी | **बलिदान** : 3 मई 1945*

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने जब देश के युवाओं का आह्वान किया तो उसमें जनजाति समाज के युवा भी उठ खड़े हुए। उत्तराखंड के जौनसारी जनजाति के युवक केसरी चंद द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय सेना में शामिल हो गए थे। वे मलाया में पदस्थ थे, जहाँ युद्ध के दौरान वे जापानी सेना द्वारा बंदी बना लिए गए। नेताजी के आह्वान पर वे आजाद हिंद फौज में शामिल हो गए। वहाँ उन्होंने कठिनतम दायित्व निभाए। इम्फाल में हुए एक युद्ध में वे अंग्रेजों द्वारा बंदी बना लिए गए और मात्र 24 वर्ष की आयु में 3 मई 1945 को फाँसी पर चढ़ गए।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनजाति नायक

“स्वतंत्रता संग्राम में हमारे जनजाति नायकों की वीरगाथाओं को देश के सामने लाना, उसे नई पीढ़ी से परिचित कराना, हमारा कर्तव्य है।”

श्री नरेंद्र मोदी जी

माननीय प्रधानमंत्री

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनजाति नायक

तू-मैं, एक रक्त

वनवासी कल्याण आश्रम

वनवासी कल्याण आश्रम एक पंजीकृत सामाजिक संगठन है। अपने वनवासी बंधुओं का सर्वांगीण विकास हमारा लक्ष्य है। सन 1952 में प्रारम्भ हुए वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा वर्तमान में 90 प्रतिशत जनजाति जिलों में कार्य चल रहा है। हम शिक्षा, आरोग्य, कृषि एवं आर्थिक विकास के क्षेत्र में 14,201 गांवों में 20,118 प्रकल्पों का संचालन कर रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण, मानव संसाधन विकास, महिला सशक्तिकरण और युवाओं में खेल प्रतिभाओं का विकास जैसे क्षेत्र में भी हमारा कार्य तेजी से बढ़ रहा है। अपने कार्यकर्ताओं के प्रयासों से सांस्कृतिक जागरण एवं जनजाति बंधुओं के हितों की रक्षा हेतु भी हम अग्रसर हैं।

www.kalyanashram.org